Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2016 = 6.17, www.srjis.com
UGC Approved Sr. No.49366, MAR–APR, 2018, VOL- 5/44

^xqV fujis{k uhfr dh ¼Hkkjrh; lUnHkZ esa½ izklafxdrk**

foosd ;kno, **Ph. D.**

jktuhfr foKku foHkkx, l-,V t- ch- ,e- dkyst] ekMb] f'kdksgkckn ¼m0iz0½

Abstract

प्रस्तुत शोधपत्र विश्व राजनीति में गुट निरपेक्ष आन्दोलन एवं इसकी प्रासंगिकता को भारत की विदेश नीति के विशेष सन्दर्भ में सन् 1990 से अद्यतन एक समालोचनात्मक अध्ययन के रूप में प्रस्तुत किया गया है जो शोध–प्रारूप की दृष्टि से द्वितीयक तथ्यों पर आधारित है। सन् 1949 में चीन के प्रधानमंत्री माओत्सेतुंग ने कहा था कि विश्व दो गुटों lkekT;oknh ¼iwathoknh½ rFkk lkE;oknh esa cV pdk gS ftuesa ls lHkh dks ,d puuk gS(rhljk dksbZ ekxZ ugha gSA ijUrq i- usg:] ukflj vkSj VhVks us xqgu fpUrukijUr ,d rhljk ekxZ fudkyk ftls ^xqV fujis{k uhfr dk uke lkjtuk tkrk gSA xqV fujis{k vkUnksyu dh mRifRr dk dkj.k dksbZ lS;kx ek= ugha gS vfirq ;g lfopkfjr vo/kkj.kk थी जिसका उद्देश्य नवोदित राष्ट्रों की स्वाधीनता की रक्षा करना एवं युद्ध की सम्भावनाओं को रोकना था।[1] bl अवधारणा से मुक्ति पाने वाले राष्ट्रों को शक्ति सम्पन्न राष्ट्रीय गुटों से पृथक dj mldh Lor=rk dks lqjf{kr j[kk जाय। आज एशिया, अफ्रीका तथा लैटिन अमेरिका के अधिकांश राष्ट्र गुट निरपेक्ष होने का दावा करते हैं। बेलग्रेड शिखर सम्मेलनः 1961 में भाग लेने वाले गुट निरपेक्ष देशों की संख्या जहाँ 25 थी, वहीं वर्तमान में निर्गुट देशों की la[;k 118 gks x;h gSA*

Keywords: *xqV fujis{krk] शिखर सम्मेलन] नवोदित राष्ट्र] तृतीय विश्व] rVLFkrk*

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

lkekU;r% ;g vkjksi yxk;k tkrk gS fd bl xqV fujis{krk vkUnksyu dh Hkwfedk doy :l&vefjdk ds e/; 'khr;q) ds le; esa FkhA(lu 1990 esa lksfo;r la?k ds urRo okys lkE;oknh गुट के विघटन ने विश्व राजनीति के स्वरूप तथा प्रकृति में आधारभूत परिवर्तन ला दिया एवं भीतयुद्ध समाप्त हो गया है, साथ ही 'तृतीय विश्वयुद्ध' की सम्भावनाएं समाप्त हो गयी है। गुट निरपेक्ष आन्दोलन के आठवें अधिवेशन में जिम्बाबे की राजधानी gjkjs esa yhfo;kbZ duy xnnkQh us bl आन्दोलन को ''अन्तर्राश्ट्रीय भ्रम का मजाकिया आन्दोलन'' कहा था। अमेरिकी विदेश मंत्री कॉंडालीसा jkbl us 27 tu 2007 dks Hkkjr& vefjdk O;kikj lEeyu ds vol j ij viu oDrO; esa ekStnk विश्व के सन्दर्भ में गुट निरपेक्षता की प्रासंगिकता ij loky [kM+k djrs gq, dgk Fkk fd ^eSa tkurh हूँ कि कुछ ऐसे लोग हैं जो अब भी गुट निरपेक्षता की बात करते हैं, सम्भव है कि भीतयुद्ध के दिनों में blds dN eryc jgk gks(D;kfd rc nfu;k nks ifr}U}h [kseksa esa cVh FkhA esa iNuk pkgrh gwa fd tc gj lLdfr] gj uLy vkSj gj /keZ ds ykx jktuhfr vkSj vkfFkd Lor=rk dks xy yxk jgs gSa rks xqV fujis{krk dh D;k izklafxdrk g\ bl lEeyu ds leh{kdksa] i;Zo{kdksa vkSj vkykspdksa }kjk ifjorhZ ifjfLFkfr;ksa esa bl vizklafxd djkj fn;k x;k ysfdu dN fpUrd vkt Hkh bldh प्रासंगिकता को स्वीकार करते हैं और तर्क/कारण देते हैं कि एक ध्रुवीय विश्व व्यवस्था की बजह से भीतयुद्ध के बाद भी इसका महत्व तथा उपादेयता है। इस ep dh otg ls gh fodflr vkSj

विकास ील राश्ट्रों के मध्य ''सम्पर्क सेवा का संचार हुआ है; इससे तृतीय वि व (Third World) dh vfLerk dh j{kk rFkk fiNMh vFk0;oLFkk dk l/kkju gr fofHkUu lxBu vkt Hkh lfØ; gA

भोाधार्थी की मान्यता है कि भारत की गुट निरपेक्षता की नीति गति ील रही है जिसे सात pj.kk ¼iFke% lu 1947 l 1950 rd] f}rh;% 1950 l 1957 rd] rrh;% 1957 l 1962 rd] prFkh 1962 phuh vkØe.k rFkk Hkkjrh; xV fuji{krk] ipe% Hkkjr&ikd ;) 1965 rFkk xV fuji{krk] ाश्ठमः 1977 से 1979 (असली गुट निरपेक्षता), सप्तमः सन् 1980 के पश्चात् अद्यतन गुट निरपेक्षता) e foHkDr fd;k tk ldrk gA[2]

iFke pj.k% QkfMª;k[3] ¼2011½ u fy[kk g कि आरम्भिक वर्शों में गुट निरपेक्षता की भारतीय नीति बड़ी अस्पश्ट थी, लोग इसे 'तटस्थता' का पर्याय मानते थे; जब कि पं॰ ug: bl ^ldkjkRed तटस्थता' कहकर पुकारते थे। इस अवधि में अन्तर्राश्ट्रीय मामलों में भारतीय प्रवृति का झुकाव पि चमी xV dh vkj Fkk क्योंकि भारत सुरक्षा के प्रसंग में पि चमी गुट पर निर्भर था और हमारी ि ाक्षा प्रणाली भी 'पि चमी पद्धति' ij आधारित थी इसलिए ि ाक्षित लोगों पर भी पा चात्य ि ाक्षा का iHkko Fkk(vkj 97% 0;kikfjd सम्बन्ध भी केवल पि चमी दे ाों से थे। अमेरिका व ब्रिटेन l gh Hkkjr dk तकनीकी तथा आर्थिक मददें मिलती थीं जब कि सोवियत संघ सैन्य व आर्थिक दृश्टि से भारत को सहायता देने की स्थिति में नहीं थी। भारत का झुकाव पि चमी दे ाों से अधिक होने d कारण भारत ने पि चमी जर्मनी को मान्यता देदी जबकि पूर्वी जर्मनी को ekU;rk inku ugh dhA dkfj;k ;) e Hkkjr u पि चमी गुट का पक्ष लिया और उत्तरी कोरिया को आक्रामक राश्ट्र घोशित dj fn;kA

f}rh; pj.k[4] ¼1950&1957 rd½ dh vof/k e lkfo;r l?k d ifr भारत के दृश्टिकोण में कुछ ifjoru vk;k D;kfd LVkfyu dh eR; ¼1953½ के बाद भारत के प्रति 'सोवियत दृश्टिकोण' नरम ¼mnkj½ yxu yxk] vkj vefjdk d lkFk Hkkjr d lEcU/kk e dVrk vku yxh(ftldk ie[k dkj.k ikfdLrku o vefjdk d e/; ,d lfud lfU/k gkuk Fkk ftld rgr vefjdk u ikfdLdku dk ogn ieku पर भास्त्र देने का निर्णय लिया। गोवा के प्र न पर भी अमेरिका ने पुर्तगाल का समर्थन fd;k] tcfd lkfo;r l?k u Hkkjrh; uhfr dk lno leFku fd;k vkj Hkkjr d i/kkue=h u lkfo;r l?k l vkfFkd o rduhdh enn yu vkj 0;kikj c<ku dh igy dh(lEifr Hkkjr dk fHkykb bLikr dkj[kku d fy, lgk;rk Hkh feyhA lu 1956 e Hkkjr e ^Lot ldV* mRiUu gku ij lkfo;r l?k dh Hkkfr fcVu vkj Ýkl d vkØe.kk dh dMh fuUnk dhA ^gxjh leL;k* ij Hkh भारतीय नीति, सोवियत संघ का समर्थन करती रही। संयुक्त राश्ट्र में जब हंगरी की समस्या ij xgu चिन्तन हुआ तो भी भारतीय प्रतिनिधि ने सोवियत हस्तक्षेप की कड़ी आलोचना न कर तटस्थ दृश्टिकोण द ार्शया।

Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

r`rh; pj.k¼ ¼1957 ls 1962½ की अवधि में भारत की नीति का झुकाव पुनः पि चमी गुट की ओर ifjofr`r gvk] bld db` dkj.k ¼;Fkk½ lu 1957 d vke pukok e Hkkjr d djy ikUr e lkE;okfn;k dh fot; gkuk] Hkkरत में गम्भीर आर्थिक संकट, दे ा में खाद्यान्न तथा विदे ी मुद्रा की कमी, भारत द्वारा दबी जुबान से पि चमी साम्राज्यवाद का विरोध करना, नेहरू द्वारा इस काल में vefjdh lnHkkouk ;k=k djuk vkfn½ mRrjnk;h jgA

prFk pj.k rFkk Hkkjrh; xV fujis{krk¼ phu }kjk fd, x, Hkkjr ij vkØe.k] uoEcj 1962 d le; xV fujis{krk dh uhfr dh vfXu ijh{kk gb bl le; dN vkykpdk u ^^Hkkjr dh vlyXurk नीति'' की कटु आलोचना करते हुए कहा कि ''भारत की निःगुटनीति'' राश्ट्रीय fgrk dh j{kk dju e सदैव असमर्थ रही है। ''विदे ा नीति का मौलिक उद्दे य राश्ट्र के हितों को सुरक्षित करना होता है जिसमें राश्ट्रीय अखण्डता सर्वोपरि हित है, और इसमें हमारी नीति विफल सिद्ध हुई है।''[5] vlQy gku का अन्य दूसरा कारण स्व–रक्षा के लिए पि चमी दे ाों के साथ सैन्य गठबन्धन में भाामिल न होकर भारत ने भारी भूल की है। यदि भारत पा चात्य दे ाों के साथ सैनिक संगठन का सदस्य होता तो phu mlij geyk dju dh fgEer u djrkA[6] चीनी आक्रमण के प चात् 6 नवम्बर 1962 को भारत में अमेरिकी राजदूत गॉलब्रेथ ने स्पश्ट किया कि ''सैनिक सहायता देकर हम भारत को पि चमी दे ाों के सैनिक गुट में भाामिल करना नहीं चाहते; और न भारत की असंलग्नता की नीति को बदलने के ही समर्थक हैं। इसी अवधि में अमेरिकी राश्ट्रपति जॉन कनैडी ने कई बार कहा कि ''अमेरिका; भारत की rVLFk uhfr dk Lokxr djrk gA''------ bl vkØe.k d le; vefjdh ok;q lok u 90 ?kUV d Hkhrj 1 gtkj Vu j.k lkexh dk vefjdk ls Hkkjr igpk fn;kA------ ogh lkfo;r l?k u Hkh viu fex foeku nu rFkk dkj[kkuk cuok nu dk opu fn;kA ijUr fdlh ,d xV dk lnL; cu tku ij Hाारत को दोनों महान भाक्तियों से लाभ नहीं हो सकता था। अमेरिकन विदे ा सचिव डीनरक्स ने स्वयं dgk Fkk fd oreku ifjfLFkfr e Hkkjr ^^vlyXurk dh uhfr NkMdj'' vefjdh गुट में भाामिल हो जाता तो भारत–चीन ''सीमा संघर्श'' भीत युद्ध का एक अंग बन जाता। इस मkd ij i- ug: u स्पश्ट कहा था कि ''भारत अपनी रक्षा के लिए सभी मित्र राज्यों से मदद लेगा लेकिन 'असंलग्नता की uhfr' dk ifjR;kx ugh djxkA''[7]

ipe pj.k¼ Hkkjr&ikd ;) 1965 ,o xV fujis{krk(lu 1963 e lkfo;r l?k }kjk Hkkjr&phu lhek fookn ij Hkkjr dk [kqलकर समर्थन किया जो भारत की निर्गुट नीति की एक भाानदार सफलता थी लेकिन भारत–पाक संघर्श (1965) के समय पाक समर्थक अमेरिका ने घोशणा की कि ''जब तक nkuk i{k ;) cUn ugh dj nr rc rd nkuk dk fdlh Hkh rjg dh vkfFkd o lfud lgk;rk ugh nh tk;xhA'' परन्तु 'भारत–सोवियत मैत्री सन्धि' भारतीय हितों की दृश्टि से अत्यधिक अहम मानी जा सकती है क्योंकि इसने भारत–पाक संघर्श में भारत को एक नया विश्वास, आत्म सम्मान तथा संघर्श के भू–भाग पर अपनी हैसियत का ऐहसास कराया तथा दक्षिण एि ाया की वस्तुस्थिति को नि.kk;d ekM

देते हुए तत्कालीन विशम परिस्थितियों में भारत की संरक्षा व सुरक्षा में महत्वपूर्ण योगदान दिया जिससे dfri; {k=k e ;g lUng gk x;k Fkk fd Hkkjr(xV fuji{k ugh jgk] vc ub fnYyh Lor= fu.k; d vf/kdkj dk [kk pdh gA[8] ijUr ,lh fVlif.k;k egRoghu@fujk/kkj fl) gb D;kfd vk;HkVV ¼1975½] HkkLdj ¼1979½] ,iy ¼1981½ Hkkjr&lkfo;r l?k dh e=h d irhd g(vkj vUrfj{k e Lor=uhfr d |krd HkhA

ाश्ठम चरणः असली गुट निरपेक्ष नीति (1977–1979): bfUnjk xk/kh d le; e Hkkjr dh विदे ा नीfr ,d rjQ >d x;h FkhA bl >dko dk nj djuk gh ekjkjth nlkb@turk ikVh भाासन "असली गुट निरपेक्षता" है विदे ा मंत्री बाजपायी[9] d भाब्दों में "भारत को न केवल गुट निरपेक्ष रहना चाहिए बल्कि वैसा दिखायी भी पड़ना चाहिए।" आपके अनुसार असंलग्नता से आ ाय "सo lyXurk** vFkkr lcd lkFk tMuk@lcd lkFk xBcU/ku djuk] gA ;gh l lkfo;r l?k d lkFk lEcU/k fcxM(vkj ijk{kr% vefjdk d lkFk u, lEcU/kk dk ^u;k v/;k;** vkjEHk gvkA

llre pj.k% ¼1980 l: v|ru xV fuji{krk½% i/kkue=h bfUnjk xk/kh dk tuojh 1980 e iu% सत्ता मिली तो भारत की विदे ा नीति में जो गति आयी उसका प्रभाव सर्वत्र दिखने लगा। न्यूयार्क में अन्तिम क्षणों में भारत ने असंलग्न गुट के मध्य सक्रियता के साथ विम ार्ा करते हुए प्रेरित किया एवं [kk; eY;k dk iuLFkkfir dju d i;kl fd, vkj नई दिल्ली में 98 असंलग्न राश्ट्रों के विदे ा मंत्रियों को आमंत्रित कर अन्तर्राश्ट्रीय राजनीति के प्रमुख विन्दुओं पर विचार विम ार्ा के अवसर सुलभ कराए। 77 दे ाों के समूह के अध्यक्ष के रूप में भारत ने अन्य राश्ट्रों के सहयोग से सन् 1980 से v|ru fujUrj lrr i;kl fd, g कि अन्तर्राश्ट्रीय पटल पर आर्थिक क्षेत्रान्तर्गत व्याप्त संरचनात्मक; vkr मौलिक असन्तुलन के अभि ााप को अविलम्ब दूर किया जाय। मार्च 1983 में नई दिल्ली में निर्गुट दे ाों का सातवाँ ि ाखर सम्मेलन प्रायोजित कर स्वयं निर्गुट आन्दोलन का प्रवक्ता बन गया जिसमें 101 राश्ट्रों u lgHkkfxrk dh] vkj bfUnjk xk/kh 1986 rd d fy, fuxV vkUnkyu dh v/;{k निर्वाचित हुई; 22 अक्टूबर 1985 का राजीव गाँधी का अध्यक्षीय भाशण निर्गुट आन्दोलन की वि व भाांति की दि ाा में रूचि का पाठ देता है। बैल्ग्रेड में आयोजित निर्गुट ि ाखर सम्मेलनः 1989 भाjr d fy, वरदान सिद्ध हुआ; जकार्ता निर्गुट ि ाखर सम्मेलन (1992) e Hkkjr d io i/kkue=h नरसिम्हाराव ने आतंकवाद के खिलाफ कड़ा रूख अख्तियार कर वि व दे ाों से आव्हान किया कि vkrdokn [kRe fd;k tk;(11o lEeyu] vDVcj 1995 dkVxuk e Hkkjr dh igy ij vkrdh xfrfof/k;k dh [ky eu l dMh fuUnk rFkk HkRluk dh x;hA Hkkjr u 1998 e Mfcu e vk;kftr 12वें गुट निरपेक्ष ि ाखर सम्मेलन में सक्रियता से भाग लिया और नाभिकीय परीक्षणों, हथियारों वाले सम्पन्न राश्ट्रों से प्रधानमंत्री बाजपेई ने अनुरोध किया कि ऐसे दे ा ि ाखर सम्मेलन 2003 मलेि ाया dvkykyeij e lfEefyr gk rkfd ¼1½ स्वतंत्र विदे ानीति (2) उपनिवे ावाद का विरोध (3) सैनिक गुट का सदस्य न होना (4) महा ाक्ति के साथ सैनिक गठबन्धन में सम्मिलित न होना तथा (5) किसी

Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

महा ाक्ति को अपने क्षेत्र में सैनिक अड्डk cuku dh btktr u nuk(fcUnvk ij विचार–विम ोंपरान्त निर्णय लिया जाना सम्भव हो सकें; 14वें निर्गुट ि ाखर सम्मेलन हवाना (2006) में rRdkyhu i/kkue=h euekgu flg u vkrdokn d fo:) nkgj ekud@ekun.M viuku dk dMk fojk/k fd;k(vkj dgk fd xV fuji{k vkUnkyu dk ;fn viuh iklfxdrk dk;e j[kuh g rk mI चरमपंथी भाक्तियों के विरूद्ध संगठित होना होगा।

मिश्र के भार्मअल◻ोख (15–16 जुलाई 2009) में 15वें निर्गुट ि ाखर सम्मेलन में भी प्रधानमंत्री euekgu flg u [kk| lj{kk] tyok; ifjoru] lLFkkRed l/kkj ,o of'od Lrj dh pukfr;k d lek/kku ^uke* d egRo dk mtkxj fd;kA oreku i/kkue=h eknh Hkh blh uhfr d lgkj viuh ljdkjh uhfr;k dk vey e ydj vkrdokn vkj rRlEcfU/kr jktuhfr e xV fuji{krk dh vo/kkj.kk dk tud pfd Hkkjr l gh vkt ^^uke** (NAM) के 118 सदस्य दे ा हैं जो वि व की 40% vkoknh] 36% {k=Qy vkj 66% राश्ट्रों का प्रतिनिधित्व करते हैं; जो भारतीय गुट निरपेक्ष नीति dh oreku lUnHkk e स्वीकार्यता एवं प्रसंगिकता द ार्ति हैं।[10]

निश्क◻f: Hkkjr dh fuHkxVuhfr** पडौसी दे ाों से राश्ट्रीय fgrk dh j{kk dju e ,o vkrdokn d fo:/n सदैव असमर्थ रही है। ''विदे ा नीति का मौलिक उद्दे य राश्ट्र के हितों को सुरक्षित करना होता है जिसमें राश्ट्रीय अखण्डता सर्वोपरि हित है, और इसमें हमारी नीति विफल सिद्ध हुई हA eY;k dk iuLFkkfir dj oreku xV fuji{krk की भारतीय नीति में समीचीन सं ाोधनों की आव यकता gA

References/lUnHkZ %

Dutta V.P. ; India's Foreign Policy, Vikas Publication, Jawahar Nagar, New Delhi, 2011, p. 167

Mishra Rajan K. ; International Relations and Political Alliances, Kanishk Publishers (Pvt. Ltd.) & Distributors, New Delhi, 1996, p. 103

QkfM;k Ch-,y- ; अन्तर्राश्ट्रीय राजनीति के सिद्धान्त एवं समकालीन राजनीतिक मुद्दे, साहित्य भवन प्रका ान, आगरा, खण्ड–2, 2011, पृश्ठ 327

[kUuk Ch-,u- ; अन्तर्राश्ट्रीय सम्बन्ध, एस-Ch-ih-Mh- पब्लि िंग हाउस, आगरा, 2011, पृश्ठ 27

दीक्षित माधुरी ; अन्तर्राश्ट्रीय सम्बन्ध: भारत–चीन सम्बन्धों का सन्दर्भ, प्रका ित ाोधपत्र, ''सामाजिक सहयोग'' राश्ट्रीय त्रैमासिक ाोध पत्रिका, उज्जैन (म-i-), जनवरी–मार्च 2014, पृश्ठ 47–53

nhf{kr ek/kjh (iokDr] vd tuojh&ekp 2014] पृश्ठ 48

शर्मा मथुरा लाल ; अन्तर्राश्ट्रीय सम्बन्ध; कॉलेज बुक डिपो (राज-) जयपुर, 2010, पृश्ठ 167

o 9- QkfM;k Ch-,y- ; पूर्वोक्त, पृश्ठ 326, 327

International Journal of Political Science, New Delhi, Vol. 52, 2016, p. 46-47